

Chapter - 2 मातुराज्ञा गरीयसी

अभ्यासः

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत

(क) एकशरीरसंक्षिप्ता का रक्षितव्या?

उत्तर. पृथिवी।

(ख) शरीरे कः प्रहरति?

उत्तर. अरिः

(ग) स्वजनः कुत्र प्रहरति?

उत्तर. हृदये।

(घ) कैकेय्याः भर्ता केन समः आसीत् ?

उत्तर. शक्रेण।

(ङ) कः मातुः परिवादं श्रोतुं न इच्छति?

उत्तर. रामः

(च) केन लोकं युवतिरहितं कर्तुं निश्चयः कृतः?

उत्तर. लक्ष्मणेन।

(छ) प्रतिमानाटकस्य रचयिता कः?

उत्तर. महाकविर्भासः।

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत

(क) रामस्य अभिषेकः कथं निवृत्तः?

उत्तर. कैकेय्याः वचनात् रामस्य अभिषेकः निवृत्तः।

(ख) दशरथस्य मोहं श्रुत्वा लक्ष्मणेन रोषेण किम् उक्तम् ?

उत्तर. दशरथस्य मोहं श्रुत्वा लक्ष्मणेन उक्तम्-धुनः स्पृश मा दयाम्

(ग) लक्ष्मणेन किं कर्तुं निश्चयः कृतः?

उत्तर. लक्ष्मणेन लोकं युवतिरहितं कर्तुं निश्चयः कृतः।

(घ) रामेण त्रीणि पातकानि कानि उक्तानि?

उत्तर. ताते धनुः मुञ्चनम्, मातरि च शरम्, अनुजं भरतं हननम् च इति रामेण त्रीणि पातकानि उक्तानि।

(ङ) रामः लक्ष्मणस्य रोषं कथं प्रतिपादयति?

उत्तर. रामः लक्ष्मणस्य रोषं प्रतिपादयितुं तातस्य, मातुः भरतस्य. वापि हन्तुं कथयति।

प्रश्न 3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत

(क) मया एकाकिना गन्तव्यम्।

उत्तर. केन एकाकिना गन्तव्यम् ?

(ख) दोषेषु बाह्यम् अनुजं भरतं हनानि।

उत्तर. केषु बाह्यम् अनुजं भरतं हनानि?

(ग) राज्ञा हस्तेन एव विसर्जितः।

उत्तर. केन हस्तेन एव विसर्जितः?

(घ) पार्थिवस्य वनगमननिवृत्तिः भविष्यति।

उत्तर. कस्य वनगमननिवृत्तिः भविष्यति?

(ङ) शरीरे अरिः प्रहरति।

उत्तर. कुत्र अरिः प्रहरति?

प्रश्न 4. अधोलिखितेषु संवादिषु कः कं प्रति कथयति इति लिखत

उत्तर. संवादः - कः कथयति? - के प्रति कथयति.

(क) एकशरीरसंक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्या। रामः। - काञ्चुकीयं - प्रति।

(ख) अलमुपहतासु स्त्रीबुद्धिषु स्वमार्जवमुपनिक्षेप्तुम्। - काञ्चुकीयः - रामं प्रति।

(ग) नवनृपतिविमर्शं नास्ति शङ्का प्रजानाम्। - रामः। - काञ्चुकीयं प्रति

(घ) रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्। - सीता। - राम प्रति।

(ङ) न शक्नोमि रोषं धारयितुम्। - लक्ष्मणः।। - रामं प्रति।

(च) एनामुद्दिश्य देवतानां प्रणामः क्रियते। - सीता। - रामं प्रति।

(छ) यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः। - लक्ष्मणः। - रामं प्रति।

प्रश्न 5. पाठमाश्रित्य 'रामस्य' 'लक्ष्मणस्य' च चारित्रिक-वैशिष्ट्यं हिन्दी/अंग्रेजी-संस्कृत भाषया लिखत।

उत्तर. रामस्य चारित्रिक वैशिष्ट्यम्

रामः भातृभक्तः पितृभक्तः चास्ति। सः स्वानुजेषु स्निह्यति। कैकेयी स्वपुत्राय भरताय राज्यं वाञ्छति, रामाय च वनवासम्-इति ज्ञात्वा अपि रामः तस्याः निन्दां श्रोतुं न तत्परः। एवं तां प्रति तस्य अनन्या भक्तिभावना दृश्यते। वनगमनस्य पितरादेशं सः सहर्षं स्वीकरोति। अनेन तस्य पितृभक्तिः स्पष्टरूपेण दरिदृश्यते। भरते लक्ष्मणे च तस्य स्नेहभावना पदे पदे दृश्यते। आभिरेव विशेषताभिः सः नाटकस्य नायकपदम् अलंकरोति।

राम के चरित्र की विशेषताएँ

पाठ के आधार पर श्री राम के चरित्र में मातृ-पितृ भक्ति, बड़ों का सम्मान, अपनी प्रजा तथा छोटे भाइयों के प्रति स्नेह की भावना आदि गुण स्पष्ट दिखाई देते हैं। जब काञ्चुकीय उनकी राज्यच्युति तथा चौदह वर्षों के वनवास का कारण माता कैकेयी को बताता है तो वह इसमें माता की दुर्भावना न मानकर किसी अच्छे परिणाम के बारे में ही कहते हैं। वह माता के बारे में कुछ भी अपशब्द सुनने को तैयार नहीं होते।

इस प्रकार माता के प्रति उनकी अनन्य भक्ति भावना लक्षित होते हैं। पिता के द्वारा दी गई वनगमन की आज्ञा को वे सिर झुकाकर स्वीकार करते हैं, इससे पिता के प्रति उनकी अद्भुत आदरभावना भी प्रकट होती है। कैकेयी के द्वारा भरत के लिए राज्य माँगने पर वे उससे तनिक भी ईर्ष्या नहीं करते। लक्ष्मण के प्रति उनका अथाह स्नेह भी झलकता है। यहाँ वे लक्ष्मण से सीता को वनगमन से रोकने का आग्रह करते हैं-उनकी यही चारित्रिक विशेषताएँ उन्हें नाटक का नायक सिद्ध करती हैं।

लक्ष्मणस्य चारित्रिक वैशिष्ट्यम्

राम इव लक्ष्मणः अपि पितृभक्तः अस्ति किन्तु तस्मिन् विनम्रतायाः अभावः दृश्यते । सः . अतीव क्रोधी उद्धतः चास्ति । भरताय राज्यप्राप्तिं विज्ञाय सः कैकेयी प्रति अपशब्दान् उच्चारयति ।

सः अखिलं लोकं युवतीहीनं कर्तुं वाञ्छति । सः राममपि धनुः धारयितुं कथयति । एवं सः अतीव उद्धतः अस्ति किन्तु सः रामस्य उपासकः भक्तः चास्ति। लक्ष्मण के चरित्र की विशेषताएँ राम की तरह लक्ष्मण भी पितृभक्त तथा बड़े भाई का सम्मान करने वाला है किन्तु वह शीघ्र क्रोधयुक्त हो जाता है। कैकेयी के द्वारा भरत, के लिए राज्य माँग लेने पर. वह सारे विश्व को युवतीहीन कर देना चाहता है। राम का वनवास सुनकर जब दशरथ मूर्च्छित हो जाते हैं तो वह शीघ्र राम से धनुष उठाने को कहता है। इस प्रकार वह अत्यन्त उद्धत स्वभाव का है लेकिन राम का वह सच्चा उपासक तथा भक्त है।

प्रश्न 6. पाठात् चित्वा अव्ययपदानि लिखत-उदाहरणानि -ननु, तत्र.....।

उत्तर. अथ, अत्र, च, खलु, श्रोतुम्, पुरतः, कर्तुम्, इदानीम् आदि ।

प्रश्न 7. अधोलिखितेषु पदेषु प्रकृति-प्रत्ययौ पृथक् कृत्वा लिखत-

उत्तर.

(क) परित्रातव्य = त्रा धातु + तव्यत् प्रत्यय।

(ख) वक्तव्यम् = वच् धातु + तव्यत् प्रत्यय।

(ग) रक्षितव्या = रक्षु धातु + तव्यत् प्रत्यय।।

(घ) भवितव्यम् = भू धातु + तव्यत् प्रत्यय।

(ङ) पुत्रवती = पुत्र शब्द + वतुप् प्रत्यय।

(च) श्रोतुम् = श्रु धातु + तुमुन् प्रत्यय ।

(छ) विसर्जितः = सृज् धातु + क्त प्रत्यय।.

(ज) गतः = गम् धातु + क्त प्रत्यय ।

(झ) क्षोभितः = क्षुभ् धातु + क्त प्रत्यय।

(ञ) धारयितुम् = धृ धातु + तुमुन् प्रत्यय ।

प्रश्न 8. अधोलिखितानां पदानां संस्कृत-वाक्येषु प्रयोगः करणीयः-

उत्तर.

(क) शरीरे = आत्मा शरीरे वसति ।

(ख) प्रहरति = अरिः शरीरे प्रहरति ।

(ग) भर्ता = ईश्वरः संसारस्य भर्ता अस्ति।

(घ) अभिषेकः = देवालये ईश्वरस्य अभिषेकः क्रियते।।

(ङ) पार्थिवस्य = इयं पार्थिवस्य प्रतिमा अस्ति।

(च) प्रजानाम् = राजा प्रजानां पालकः भवति।

(छ) हस्तेन = सः हस्तेन तर्जयति।

(ज) धैर्यसागरः = लक्ष्मणः धैर्यसागरः कथितः।

(झ) पश्यामि = अहमेकं सिंहं पश्यामि ।

(ज) करेणुः = करेणुः पङ्के क्रीडति।

(ट) गन्तव्यम् = अधुना त्वया न गन्तव्यम्।

प्रश्न 9. अधोलिखितानां पद्यांशानां स्वभाषया भावार्थं लिखत-

(क) शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा ।

उत्तर. शत्रु के कटु शब्दों का कष्ट बाह्य अंगों पर पड़ता है किन्तु अपने सगे सम्बन्धियों की बातों का कष्ट हृदय पर पड़ता है जो अत्यन्त दुःखदायक होता है। अंगों के घाव तो धीरे-धीरे भर जाते हैं किन्तु हृदय के घाव आसानी से नहीं भरते। वे मनुष्य को जीवन-भर कचोटते, कष्ट पहुँचाते रहते हैं-यही भाव अभिव्यक्त किया गया है। यहाँ।

(ख) नवनृपतिविमर्श नास्ति शङ्का प्रजानाम्।

उत्तर. जब काञ्चुकीय श्रीराम से कहता है कि कैकेयी के कहने से आपका अभिषेक रुक गया है तब श्री राम इसमें अनेक अच्छाइयाँ। या गुण बताते हुए कहते हैं कि राज्याभिषेक न होने का एक लाभ यह होगा कि प्रजा के मन में ऐसी कोई चिन्ता नहीं रहेगी कि नया राजा कैसा होगा क्योंकि पुराने राजा के स्वभाव आदि से सारी प्रजा परिचित होगी। अतः इन पंक्तियों का भाव यही है कि पुराना राजा बने रहने से प्रजा की चिन्ता अब बिलकुल समाप्त हो गई।

(ग) यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयाम्।

उत्तर. प्रस्तुत पंक्तियों में लक्ष्मण का कैकेयी के प्रति रोष प्रकट किया गया है। कैकेयी के दुर्वचनों से ही राजा दशरथ मूर्छित हुए हैं जो किसी को भी अच्छा नहीं लग रहा। अतः लक्ष्मण कहते हैं कि यदि आप राजा दशरथ की मूर्छा की बात को सहन नहीं कर पा रहे तो इसका प्रतिकार प्रकट करने के लिए धनुष धारण क्यों नहीं करते, क्यों आप शान्तिपूर्वक बैठे हो। कैकेयी के प्रति दया भावना को त्यागकर आपको शीघ्र धनुष धारण करना चाहिए- यही भाव अभिव्यक्त करना चाहता है कवि यहाँ अर्थात् कैकेयी के प्रति केवल शब्दों से नहीं अपितु धनुष उठाकर, प्रहार करके आपको अपना रोष तथा राजा की मूर्छा को न सहन कर पाने की भावना प्रकट करनी चाहिए।

(घ) यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः।

उत्तर. प्रस्तुत पंक्तियों में जब राम लक्ष्मण को यह समझाते हैं कि तुम क्यों इतना क्रोध कर रहे हो, चाहे भरत राजा बनें या मैं-इसमें कोई अन्तर नहीं, तब लक्ष्मण श्री राम से कहते हैं कि जिस राज्य के कारण इतना भयंकर दुःख उत्पन्न हुआ है उस राज्य के विषय में मुझे कोई अभिलाषा नहीं है किन्तु मुझे इस बात से दुःख है कि आपको चौदह वर्ष का वनवास का कष्ट भी तो सहन करना होगा। अर्थात्

लक्ष्मण को श्रीराम के वनवास का कष्ट अधिक पीड़ा पहुँचा रहा है, राजा कोई भी बन जाए उन्हें अभिलाषा नहीं है।

प्रश्न 10. अधोलिखितपदेषु सन्धिच्छेदः कार्यः

उत्तर-

1. रक्षितव्येति = रक्षितव्या + इति।
2. गुणेनात्र = गुणेन + अत्र।
3. शरीरेऽरिः = शरीरे + अरिः।
4. स्वजनस्तथा = स्वजनः + तथा॥
5. येनाकार्यम् = येन + अकार्यम्।
6. खल्वस्मत् = खलु + अस्मत्।
7. किमप्यामितम् = किम् + अपि + अभिमतम्।
8. हस्तेनैव = हस्तेन + एव।
9. दग्धुकामेव = दग्धुकामा + इव।